अध्याय पांच

शोध-सार एवं निष्कर्ष

शोध-सार एवं निष्कर्ष

5 1 भूमिका

विज्ञान की प्रगति एवं होने वाले नित नये अविष्कारों के साथ समन्वय करने में विकासशील देशों को ही नहीं वरन् विकसित देशों को भी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। विज्ञान की यह प्रगति समाज के हर वर्ग को प्रभावित कर रही है। अतः विज्ञान व प्रौद्योगिकी के प्रति मानव-समाज की अभिवृति को सकारात्मक बनाने व उसकी सहायता से समस्या समाधान की जानकारी को जन-जन तक पहुँचाना आवश्यक हो गया है।

उपर्युक्त अध्ययन के माध्यम से इस दिशा में लघु प्रयास किया गया है। इस लघुशोध में शोधकर्ता ने विभिन्न शैक्षिक उपकरणों के उपयोग से रेडियो पाठों की प्रभाविता का अध्ययन किया है।

5 2 संक्षेपिका

सम्पूर्ण शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में उद्देश्य, शोध समस्या का सीमांकन, प्रयुक्तचर, मान्यतायें, शोध शीर्षक को दर्शाया गया है।

5 2 1 समस्या कथन

"प्राथमिक स्तर पर आकाशवाणी द्वारा प्रसारित रेडियो पाठों की प्रभाविता का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

5 2 2 शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्न विशिष्ट उद्देश्य थे:-

(i) – रेडियो पाठों के प्रसारण से प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभावों को ज्ञात करना।

(ii) – प्राथमिक शिक्षकों से रेडियो पाठों के प्रसारण के अभिमत ज्ञात कर उनका विश्लेषण करना।

(iii) – विशेषज्ञों के अभिमत के आधार पर प्रसारित रेडियो पाठों की प्रभाविता का विश्लेषण करना।

(iv) – रेडियो पाठों के प्रसारण में आने वाली कठिनाईयों एवं कमियाँ ज्ञात कर समाधान हेतु सुझाव देना।

5 2.3 शोधचर

विश्लेषण की सुविधानुसार हमने चरों को दो भागों में वर्गीकृत किया है :

स्वतंत्रचर : रेडियो पाठों का प्रसारण
आश्रितचर : विद्यार्थी

5.2.4 मान्यतायें

- जो बालक बालिकायें रेडियो पाठों को सुनते है उससे उनके ज्ञान में वृद्धि होती है।
- जो विषय कक्षा में विद्यार्थी समझ नहीं पाते वे रेडियों प्रसारित पाठों के माध्यम से अच्छी प्रकार से समझ जाते हैं।
- जो शिक्षक इन पाठों को सुनते है उनमें शैक्षिक नवाचारों के प्रति रुझान पैदा होता है।

525 समस्या का सीमांकन

(i)- जिन विद्यार्थियों ने अनुगूंज कार्यक्रम सुना है उन्हीं को इस कार्यक्रम में शामिल किया है।

(ii) - जिन शिक्षकों एवं विशेषज्ञों ने अपने पत्र अनुगूंज कार्यक्रम के संदर्भ में लिखे है उन्हें इस शोध कार्य में शामिल किया है।

(iii) - इस शोध कार्य में आकाशवाणी, भोपाल से प्रसारित होने वाले पाठों की प्रभाविता का ही विश्लेषण किया गया है। द्वितीय अध्याय में शोध समस्या से सम्बन्धि पूर्व में हुए शोध कार्यो की जानकारी दी गयी है। इनमें से विदेशों में किये गये अध्ययन में फ्रेन्ड गाल्डा और सीरी (1980)और क्रिस्टेन्सन (1985) की प्रमुख है। भारत में किये गये अध्ययन में श्रीवास्तव (1974), एन.सी.ई.आर.टी. (1975), मोहन्ती एवं मोहन्ती (1975), सिंह एवं शुक्ला (1980)व गोयल (1982) आदि प्रमुख है।

तृतीय अध्याय में शोध समस्या प्रविधि, न्यादर्श चयन प्रक्रिया, प्रयुक्त शैक्षिक उपकरण, प्रश्नावली का निर्माण एवं विकास, प्रदत्तों का संकलन तथा प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त तकनीकी को दर्शाया गया है।

526 न्यादर्श चयन प्रक्रिया :

अनुसंधानकर्ता ने न्यादर्श का चयन सुविधानुसार उद्देश्यपूर्ण विधि से किया है जिसमें 30 विद्यार्थी, 20 शिक्षक व 20 विशेषज्ञों को शामिल किया गया है।

5 2.7–प्रयुक्त शैक्षिक उपकरण :

प्रस्तुत शोधकार्य के लिये शिक्षकों एवं विशेषज्ञों के लिये प्रश्नावली का निर्माण किया गया। जिसमें कुल 9-9 प्रश्न थे।

5 2 8 प्रदत्तों का विश्लेषण हेतु प्रयुक्त तकनीकी

प्रस्तुत शोधकार्य सर्वेक्षण विधि से किया गया है।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

5 2 9 सांख्यिकी

प्रस्तुत शोधकार्य में प्रतिशत का प्रयोग किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण सारणी - 2 के आधार पर किया गया है। उनका विश्लेषण करने के बाद उसकी व्याख्या की गयी है। विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित अभिमत प्रकाश में आये:

अनुगूंज कार्यक्रम के बारे में विद्यार्थियों के अभिमत:

- यह ज्ञानप्रद व रोचक कार्यक्रम है
- कार्यक्रमों की भाषा सरल व समझने योग्य है।
- आवश्यकतानुसार स्वरों में उतार-चढ़ाव आया है।
- पाठों में प्रभावलाने के लिये वाद्ययंत्रों, पटाखे आदि का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है।
- संवाद शैली उपयुक्त व रोचक थी।
- पाठ की विषय-वस्तु के अलावा मूल्यों के विकास पर भी प्रकाश डाला गया है। उदा. के लिये : (दया नहीं सहयोग चाहिए) पाठ में आत्मनिर्भरता की शिक्षा मिलती है।
- प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मो से महान् होता है न कि अपने जन्म से। 'महान्ता जन्म से नहीं कर्म से होती है' के पाठ में **अब्राहम लिंकन** के दृष्टांतों से इसकी पुष्टि होती है।

शिक्षकों के अभिमत :

– कार्यक्रम को अत्यंत प्रभावी एवं शिक्षा की दिशा में क्रांतिकारी कदम बताया है।

– कार्यक्रम में शब्दों की अस्पष्टता के कारण पाठ को समझने में कठिनाई होती है।

– जगह–जगह संगीतमय दोहे, कवित्त से ध्वनि प्रभाव आकर्षक हो गयी है।

– भूमिका निर्वाह (रोल प्लेइंग) विधि के प्रयोग से पाठों में रोचकता आ गयी है।

– पाठों में बच्चों को शामिल करने से इनमे कृत्रिमतानहीं लगती।

– रेडियो के माध्यम से दी गई जानकारियां अधिक समय तक स्थाई रहती।

कमियाँ :

– समय सीमा को बढ़ाया जाय।

– पाठ की गति तेज होने से कुछ महत्वपूर्ण बातें सुनने से छूट जाती है।।

– पाठों को दोहराया नहीं जा सकता

– कठिन शब्दों के प्रयोग होने से बच्चे उन शब्दों के अर्थ नही समझ पातें

– रेडियो पाठ बच्चों की जिज्ञासाओं को पूरी तरह शांत नही कर पाते।

पंचम अध्याय में शोध सारांश, निष्कर्ष, सुझाव एवं भावी शोध हेतु समस्यायें दी जा रही हैं।

लघु शोध के अंत में संदर्भित ग्रंथ एवं परिशिष्ठ सूची दी जा रही है।

5 3 निष्कर्ष एवं व्याख्या

इस अनुसंधान के पूर्व विवेचन करने के पश्चात् किसी निष्कर्ष तक पहुँचने के पूर्व यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि अध्ययन में उपलब्ध तथ्य अंतिम नहीं है, क्योंकि यह एक लघु शोध है जिसमें सीमित क्षेत्र के छोटे से न्यादर्श का उपयोग किया गया है। न्यादर्श के प्रदत्तों के संकलन एवं विश्लेषण करने के पश्चात् निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये गये:

- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों से प्राप्त जानकारी के अनुसार आकाशवाणी से प्रसारित दैनिक शैक्षिक कार्यक्रम छात्र-छात्राओं के लिये अत्यंत उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक है।
- प्राथमिक शिक्षकों से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस कार्यक्रम को सुनने के बाद बच्चे अपनी जिज्ञासायें प्रकट करते है जिससे उनका ज्ञानात्मक, नैतिक और बहुमुखी विकास होता है।
- प्राथमिक शिक्षकों की राय में शैक्षिक प्रसारण के लिये विद्यालयों मे एक कालखण्ड दैनिक रुप से निर्धारित करना चाहिए।
- विद्यार्थियों के अनुसार इस शैक्षिक कार्यक्रम का प्रसारण समय उचित नहीं है। शाम को प्रसारित होने के कारण अधिकांश बालक-बालिकायें खेलने चले जाते है जिससे वे इस कार्यक्रम को नहीं सुन पाते।
- रेडियो पाठों के प्रसारण के समय साथ में शिक्षकों का होना भी अनिवार्य है।
- सभी विद्यालयों के अध्यापकों के मतानुसार कार्यक्रम बहुत अच्छे व रुचिकर होते हैं अतः यह कार्यक्रम बच्चों को अवश्य सुनने चाहिए ।

5 4 सुझाव

- प्राथमिक स्तर से ही विद्यार्थियों में रेडियो पाठों के प्रति रुचि जागृत करना चाहिए,
- रेडियो पाठों को विद्यालयों में अनिवार्य विषय के रुप में शामिल किया जाना चाहिए,
- रेडियो पाठों के प्रति शिक्षकों की अभिवृति एवं अवचेतना को सकारात्मक रुप देने के लिए संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षक विद्यार्थियों के व्यवहारिक जीवन में रेडियो को उचित स्थान दिला सके,
- शिक्षकों को व्यक्तिगत भिन्नता वाले विद्यार्थियों के शिक्षण हेतु शिक्षण मशीन एवं रेडियो आदि का प्रयोग करना चाहिए एवं
- रेडियो के लिए आलेख- लेखकों को गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता है इसको अमल मे लाया जाय।

5 5 भावी शोध हेतु समस्याएं

भविष्य के शोध हेतु कुछ प्रस्तावित समस्याऐं इस दिशा में महत्वपूर्ण अध्ययन के लिये दी जा सकती है, क्योंकि भारत की विद्यालयीन शिक्षा के पाठ्यक्रम में रेडियो शिक्षा को उचित स्थान नहीं मिल पाया है। इस दिशा में शोधकर्ता के अनुसार भावी शोध हेतु कुछ महत्वपूर्ण समस्याएं इस प्रकार हो सकती है:

- विभिन्न शैक्षिक स्तर के विद्यार्थियों का रेडियो शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
- शिक्षा प्रणाली के विकास में रेडियो शिक्षा के योगदान का अध्ययन।
- आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन।

- भावी भारत के लिए रेडियो शिक्षा के स्वरुप और उसके क्रियान्वयन का अध्ययन।
- आकाशवाणी से प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों की गुणवत्ता एवं उपयोगिता का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन।
- प्रशिक्षक शिक्षकों की रेडियो शिक्षा के प्रति अभिवृति व अवचेतना का अध्ययन।